शेख़ फ़रीद - सबद ३५
साहुरै ढोई ना लहै पेईऐ नाही थाउ ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७९

साहुरै ढोई ना लहै पेईऐ नाही थाउ ॥
पिर वातड़ी न पुछई धन सोहागण नाउ ॥३१॥

सार: एक वास्तविक सुरक्षित निवास सिर्फ़ भौतिक स्थान, पदार्थवादी संपत्ति पर आधारित नहीं होता बल्कि यह सार्वभौमिकता के साथ एक गहन संबंध का प्रतीक है। जिस घर की नींव कमज़ोर होती है, वह बाहर से स्थिर प्रतीत होने पर भी स्वाभाविक रूप से अस्थिर ही होता है। इसी प्रकार हम आंतरिक कलह से जूझते हुए भी सतही तौर पर ठीक दिख सकते हैं। आरामदायक, समृद्ध और सामुदायिक वातावरण में भी, आत्म-चिंतन, ईमानदारी और सार्वभौमिक प्रेम के बिना, हम असुरक्षित और खोया हुआ महसूस कर सकते हैं। यह अलगाव हमें याद दिलाता है कि कोई भी बाहरी परिस्थिति हमें हमारे आंतरिक संघर्षों से नहीं बचा सकती। सच्ची सुरक्षा के लिए हमें अपने भीतर शक्ति और जागरूकता का विकास करना होगा जिससे हम स्वयं और संसार से गहराई से जुड़ सकें।

साहुरै ढोई ना लहै पेईऐ नाही थाउ ॥
न तो ससुराल में ठिकाना है, न मायके में आसरा है। यह मन की अलगाव की स्थिति को दर्शाता है जहाँ भौतिक संसार में कोई तृप्ति नहीं और वास्तविक सार से भी विमुखता महसूस होती है।

पिर वातड़ी न पुछई धन सोहागण नाउ ॥३१॥
प्रियतम उसके बारे में नहीं पूछता फिर भी दुल्हन को धन्य माना जाता है। यह दर्शाता है कि चेतना से एकत्व का अभाव होने पर भी बाहरी दिखावा झूठी सद्भावना प्रस्तुत करता है। (३१)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद नयी दुल्हन के रूपक का प्रयोग करते हैं जो अपने वैवाहिक और पैतृक घर- दोनों में अप्रिय महसूस करती है। यहाँ तक कि जब उसका प्रियतम भी उसकी ओर ध्यान नहीं देता तब

भी उसे धन्य माना जाता है। यह चित्रण उस व्यक्ति की मानसिकता को दर्शाता है जो ज्ञान को अपनाने और सृष्टि के सार से जुड़ने के लिए संघर्ष करता है। यद्यपि आंतरिक रूप से वह अपनी चेतना के साथ संरेखित नहीं होता फिर भी बाहर से सामंजस्यपूर्ण और सम्पन्न प्रतीत होता है। शेख फ़रीद का चित्रण हमें प्राकृतिक व्यवस्था को अपनाने, अपने वास्तविक स्वरूप को स्वीकार करने, सृष्टि की एकता से जुड़ने और दुनिया को उसके बाहरी स्वरूप से परे देखने के लिए प्रोत्साहित करता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com